दो सौ पंद सूद मदं

अलमारूफ

दो सौ कार आमद नुस्खें (नसीहतें)

बिस्मिल्लाहिर्रहमनिर्रहीम– अल्हम्दुलिल्लाहि व नहमदूहु अस्सलातु वस्सलामु अला मल्ला नाबय्युन बअदहू व अला आलिही व अस्हाबिही आजमईन

अम्मा बाद

अगर चे दौरे हाजिरा में पंद व नसीहत कबूल करने वालों की कमी है। लेकिन ब मुताबिके खुदा,, पंज अंगुश्ते यकसां नकर्द,, पांचो उंगलियां बराबर नही होती ।

बाज बन्दगाने खुदा अब भी है जो पंद नसीहत को गौहरे व नायाब समझ कर उन पर अमल करने की कोशिश करते हैं। अहले इस्लाम से अपील है कि फकीर के जमा कर्दा पंदं व नसाएह का रिसाला खुद भी हिज करके अहबाब को सुनायें और बच्चों बच्चियों को भी ताकि वह अभी से अच्छी बातों में

महव हो कर इन कीमती नसाएह पर अमल करके आप के लिए दुन्या और आखिरत का बेहतरीन सरमाया साबित हों।

1. हर काम अल्लाह की रज़ा के लिए खुलूस से करो।
2. रसलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इश्क व मुहबत का बीज दिल में बोओं यूंही आपके अदब और ताजीम को जाने ईमान समझें।
3. अम्बिया व औलिया से अकीदत रख्खो उन के आदाब और एजाज मे ंकमी न करो। (यूं ही उलमाए अहलेसुन्नत के साथ पेश)
4. आपने रुतबे से बढकर दावा न करो– हर वक्त अज्ज व तवाजोअ में रहो।
5. जिस लियाकत का जो आदमी हो उस की वैसे ही इज्ज़त करो।
6. हर एक का हक पेहचाना।
7. जो राज कहने के काबिल न हों मुंह से हरगिज न निकालों
8. दोस्त की पहचान यह कि वक्तें मुसीबत काम आये।
9. अहमक और नादान आदमी की सोहबत से कनारा करो।

10.अकलमंद और दाना आदमी से दोस्ती करो।

11.नेक काम में जिस कद्र हों सके जल्द कोशिश करों।

12.जब तुम कोई बात कहो तो दलील के साथ कहों और झूठा दावा न करो।

13.जवानी के दिन बडे खतरनाक हैं उन में नेकी करना मरदानगी है।

14.किसी शख्स से फुजूल बहस व मुबाहेसा मत करों ख्वाह दोस्त हों या दुशमन

15.मां बाप को अपने सर पर गनीमत समझो।

16.उसात्जह (उस्ताद) की इज्जत बाप से जियादा करो कियोंकि वह तुम्हारी रूह की इस्लाह करते है।

17.आमदनी से ज्यादा कभी खर्च न करो।

18.सब कामों में मयाना रवी (   ) इख्तेयार करों।

19.अगर कोई शख्स मेहमान बन कर तुम्हारें घर आये तो उसकी खिदमत करो।

20.अपनी आंख और जबान को हर वक्त अपने काबू में रखो।

21.अपने पड़ोसी को हरगिज तकलीफ न दो बल्कि अपनी तरह तसव्वुर करो।

22.अपना लिबास और बदन पाक और साफ रखों ताकि सेहत ओर इज्जत हासिल हों।

23.अपनी औलाद को इल्म व अदब सिखाओं कि दीन व दुनया की खुशियां मिले।

24.जब किसी मज्लिस में कोई बात कहना चाहों तो खूब गौर कर लों कि वहॉ वह बात किसी के खिलाफ न हों।

25.कोई बात ऐसी न करों कि अहले महफिल की नफरत किसी भी फरीक के खिलाफ हो।

26.हाकिम को लाजिम है। इन्साफ की बात कहें अगर चे किसी भी दोस्त या अपने जैसा मत समझो।

27.अहले मज्लिस में से हर एक को अपना हम मजहब, अपना दोस्त या अपने जैसा मत समझों

28.भूक से ज्यादा खाना खाना मुनासिब नही यह बात सेहत के खिलाफ है।

29.जिस बात को तुम अपने लिए बुरा समझते हों वह दूसरों के लिए भी पसंद न करो।

30.किसी की चीज का लालच मत करों हसद से बचों, रशक की आदत डालो

31.कम बोलना, बहुत सोचना और हस्बे जरूरत सोना दानाई के काम है।

32.मतलब परस्त दोस्त से कभी वफा की उम्मीद न रखो।

33.जिस काम को तुम अभी तक नही कर पाए यह मत समझो कि वह हो गया।

34.जब बोलना चाहो तो खूब सोच जो कि यह बात कहू कि न कहू बोलने में इस कदर जल्दी न करों जिस तरह सोचने में

35.जो काम आज करना चाहिए उसे कल पे मत छोडो।

36.जो शख्स अपने से बुजरुग हो उस से मजाक न करों

37.बड़े ओहदे वाले आदमी के रूबरू बहुत मुख्तसर बात करों

38.अवामुन्नास (पब्लिक) से इस तरह बात चीत न करो कि बेबाक हों जाये तो उसे हरगिज मायूस न करो

39.अगर किसी हाजत मंद का कोई काम तुम्हारें हाथ या बात से मुम्किन हो जो उसे हरगिज मायूस न करों

40.अगर कोई बेवकूफी की बात तुम से सादिर हो जाए तो उसे हमेशा याद रखों कि आइन्दा यह गल्तियां दोबारा न हों

41.ऐसा मुख्तसर भी न बोलो कि किसी की समझ मे न आये

42.हर रोज रात को जब सोना चाहे तो पहले शुमार कर लिया करों कि आज के दिन कौन सी गल्तियॉ हुई हैं। मुझ से ताकि दूसरे दिन उन से बच सको।

43.अगर कोई नेकी तुम से हो गई हो तो उस को भूल जाओ। क्यिोंकि उसका याद रखना गुरूर पैदा करता है।

44.अगर किसी का भला होता हो तो बहाने मत करो।

45.दुशमन की भी बुराई मत चाहों अगर हो सके तो ऐसे पर कुछ एहसान कर दो।

46.नेकी करना किसी के साथ ऐसा है कि गोया उस को बनाम उमर अपना गुलाम बनाना है।

47.बुरे आदमी का मुकाबला में नेकी से करना ऐसा है कि गोया उसको एहसान के कैदखाने में हमेंशा के लिये कैद करना।

48.तुम भलाई करके भूल जाओंगे लेकिन जिस के साथ तुम कुछ भला करों वह तुम्हें कभी भी नही भूलेगा।

49.जब किसी शख्स से कोई और शख्स बात कर रहा हो तो तुम हरगिज उस के बीच में न बोलों अगर चे तुम वह बगै पूछे बोल उठता है।

50.अहमक की एक निशानी यह भी है। वह बंगेर पूछे बोल उठता है।

51.अपने माल और अस्बाब को अपने अकारिब से ऐसा छुपा के न रखों कि बाद तुम्हारें मरने के भी उन्हे दस्तयाब न हों

52.मगरूर आदमी को कोइ पसंद नही करता अगर वह बादशाह ही क्यों न हों

53.गीबत किसी की न करों खुसूसन नेक आदमियों की बुराई कभी न करो।

54.जहॉ मजहब होने उसके बर खिलाफ बात न करनी चाहिए अगर खिलाफे शरअ हो तो उस दूर रहना बहतर है।

55.अगर हों सके तों सखावत पसंद रहों खुद बीनी खुद गर्जी और खुशामद से बचों

56.सुस्ती को पास न आने दो यह तनाम खरावियों की जड़ है।

57.बैहूदा, तअना आमेज गुफ्तुगू से परहेज़ करो, और किसी का मजाक न उड़ाओं

58.किसी आदमी को गैर आदमियों के सामने शरमिन्दा न करों

59.खुदबीनी खुद गर्जी और खुशामद से बचों

60.अगर किसी को तम्बीह करना हो तो गोशे में तन्हा बुलाकर समझादा ।

61.अगर किसी शख्स ऐबदार हो जैसे लगंडा, लूलां, कोताह, गर्दन लांगर या दाइमुल मर्ज तो उसे अपना नौकर न रखो।

62.किसी गैर के नाम का खत हरगिज न पढों

63.अगर कही से कोई खत आपके नाम आया हों तो सब काम छोड कर पहले इसकों पढो।

64.जिस वक्त कोई शख्स कुछ लिख रहा हो तो उसको हरगिज न देखो जब वह खुद इजाजत न दे।

65.जो बात मुंह से निकल जाए वह अब तुम्हारें इख्तियार में नही है।

66.अपनी या अपने कुम्बे की तारीफ कभी अपने मुंह से न करों

67.मर्दो को औरतों की मुशाबेहत नही करनी चाहिए।

68.जो जेवर औरतों के लिए खास है मर्दो को चाहिए उस से बचें

69.मर्दो को चाहिए कि वह ऐसा कपड़ा या जेवर न पहने जो औरतो को जेबा दे।

70. जब तक हो सके लड़ाई और झगडा न करों, सुलह करने मे ही हर तरह का अमन है।
71. हर एक काम में जल्दी करना बुरा है।
72. जो शख्स तुम्हारी इज्जत करें तुम उसकी इज्ज़त जरूर करो।
73. गुस्सा के वक्त जो बात तुम कहना चाहों तो पहले खूब सोच समझ लों कि इस बात से कोई कबाहत तो बर्पा न होगइ।
74. मेहमान के रूबरू किसी पर खफा नही होना चाहिए।
75. मेहमान से कुछ काम न लो बल्कि उस का काम करें
76. किसी का या नुकसान की सूरत में अपनी चेहरे के आसार न बदलों
77. ऐसी आदत ईख्तियार न करों कि लोग तुम्हें फुजुल समझे।
78. किसी का झगडा अपने जिम्मा मत लों।
79. तीन चीजें हमेशा अपने साथ रखों, कुछ पैसें, चादर और अंगूठी।

80.तरफदारी वहां तक मुनासिब है कि खुद जलील व ख्वार न हो जायें

81.सेहत एक बड़ी नेअमत है उसे जाय न करों

82.शहर के हाकिम हकीम और डॉक्टर से दोस्ती पैदा करों

83.दुनिया में अपने आप को मिस्कीन और मुतावाजेअ बनाये रखों

84.हर वक्त खुदा को पेशे नजर समझों

85.अपने नफ्स पर कहर करते रहों

86.अल्लाह की मख्लूक से इन्साफ करों किसी की तरफदारी या किसी पर जियादती न करो।

87.बुजुर्गो की खिदमत करों– और छोटो पर शफकत करो।

88.मुहताजों से सखावत से पेश आओ।

89.दोस्तों और यारों को नसीहत करते रहों।

90.दुशमनों को गुआफ करों, मुसाफिरों से मुहब्बत से पेश आओं

91.जाहिलों से ब जरूरत बात करों, अगर वह कुछ कहे तो खामोश रहों

92.जो तुम्हारा पेशा हो जहॉ तक हो उसे फरोग़ दों
93.किसी लालच को मद्दे नजर रख कर इल्म हासिल न करों बल्कि अपना जाहिर और बातिन संवारों।
94.अहमक की निशानी है कि वह बहोत बोलाता है और बगैर समझे जवाब देता है।
95.जो शख्स एक ही बात बार बार दोहराए मुहब्बत के कौल को न समझे तअस्सुब की बात करे और तहकीक न करें वह जाहिल और अहमक हैं
96.आलिमे बे अमल ऐसा है जैसे अंधे के हाथ में चिराग
97.जो शख्स किसी की गीबत तुम्हारें सामने करता है वह तुम्हारी गीबत किसी और के सामने भी करता होगा।
98.जब तक ज़र से काम निकले आपने आप कों मुसीबत में डालना चाहिए।
99.न इतना लुत्फ व करम –कि लोग असीर बन जायें।
100. जालिम हाकिम दुशमन है मुल्क का –ऐसे ही जाहिद बे अमल है दुश्मनें दीन का
101. अमानत में खयानत बहुत बुरी बला है।

102. सब से बडी नसीहत यह है कि बन्दा झूठ न बोले

103. जिस ने अपनी जबान काबू मे की उसने कई मसायब अपने इख्तियार में कर लिए

104. लालच हलाकत का सबब है

105. बहतर माल वह है जिस से इज्जत बनी रहे।

106. जहालत सब सें बडी मुसीबत है।

107. बुरी सोहबत से बहतर है कि इन्सान तन्हा रहे।

108. अच्छी किताब वह है जिस के पढने से इन्सान अपना मुहासबा करे अपनी अच्छाईया बुराईया किताब में ढूंड सके, और खुदा की पहचान हो सके।

109. हकीम की आजमाईश गुस्सा के वक्त करें, और शुजाअ (बहादुर) की जंग के वक्त , और दोस्त की जरूरत के वक्त

110. खैरात ऐसे करो कि दाऐं हाथ से खैरात करो तो बाये हाथ को खबर न हों

111. नैक कामों में साबित कदमी इख्तियार करो ताकि अन्जाम उस का भला हो ।

112. जो शख्स किसी की बुराई खुश होकर सुन्ता है वह गीबत करने वालों में शुमार होता है।

113. जल्दी का काम नदामत का बाईस, और सोच समझ कर काम करना राहत का बाईस है।

114. जो शख्स आराम की कदर नही करता वह बहुत रंज उठाता है।

115. हर एक बात पर हंसता और हर एक बात से नफरत करना बेवकूफों की खसलत में शुमार होता है।

116. तकदीर के लिखे पर सब्र करना चाहिए (जैसे मौत रिज्क बगैरा)

117. जो शख्स कोशिश करता है वह अपना मतलब जरूर हासिल करता ह‌ै।

118. कि जो सब्र करता है वह फतह पाता है।

119. वक्त बहुत कीमती शैय है कोई घडी उसकी बेकार न जाने दो ।

120. खुदा और मौत को हमेशा याद रखो, और नेकी जो तुम ने की या किसी ने तुम से बुराई की हो,उसे हमेशा भूल जाओ।

121. जो शख्स जबान शींरीं और इख्लाक से बात करता है उस से हर कोई खुश होता है।

122. लालच ज़िल्लत की और बद मिजाजी दुशमनी की कुन्जी है।

123. जब तक इन्सान ज़िन्दा हुआ, उसे हमेशा अपने इल्म की तरक्की करनी चाहिए।

124. अक़लमन्द को एक इशारा काफी होता है, और जाहिल को सजा देने की जरूरत होती है।

125. आजिज़ी से इज्ज़त बढ़ती है और तकब्बुर से रुत्बा घटता है।

126. दोस्त से कर्ज़ लेने मे कभी रंज भी हो जाता है। इसलिए दोस्त से नही लेना चाहिए।

127. कमीने को जब कोई ओहदा मिलता है तो तकब्बुर करता है और जब हाकिम बनता है तो जुल्म करता है।

128. अपने मिज़ाज को काबू मे रखो इज्ज़त के काबिल बन जाओगें।

129. अकलमन्द शख्स वह है जो गैरों को मुसीबत ज़दा को देखकर खुद नसीहत हासिल करता है।

130. अल्लाह की इबादत हर गम का इलाज है।

131. तलवार का जख्म जिस्म पर लगता है और गुनाहो का रूहों पर

132. जो लोगों का शुक्रिया नही कहता वह अल्लाह का शुक्र अदा नही करता

133. मोमिन की निय्यत उसके अमल से बेहतर है।।

134. भूका अगर चे दुशमन भी हो तो उसे भी खाना खिलाना चाहिए।

135. इबादत वह करता है। जिसे खौफ हो खुदा का

136. इन्सानो के लिए बेहतरीन हस्ती उसकी अपनी मॉ है।

137. खुद गर्ज इन्सान से कभी भलाई की उम्मीद न रखो

138. दो मुसलमानों में सुलह करवाना बेहतरीन इबादत है

139. जबान की हिफाजत दौलत की हिफाजत से ज्यादा मुश्किल है

140. वह जिन्दगी बेकार है जो किसी के काम न आसके

141. सब से बड़ी नसीहत मौत है अगर समझो तो

142. जो अपनी आंख को हराम से महफूज रखाता है उसकी आंख को दोनों जहां में सदमा न होगा।

143. अल्लाह तबारक व तआला से गाफिल होना आग में जाने से ज्यादा सख्त तर है ।

144. वह शब (रात) बेकार है जिस में इबातन न की जाए।

145. नेक हमसाया (पड़ोसी) दूर के रिश्तेदार से बेहतर है

146.

147. ज़िन्दगी एक सफर है उसे अच्छी कौफियत से मुकम्मल करो।

148. दिल आज़ारी सब से बड़ा गुनाह है

149. तकब्बुर करने वाला अपने मुंह के बल गिरता है।

150. औलाद के लिए मॉ बाप किब्ला हैं vkj मुर्शिद (पीर) इस से बढ कर है।

151. अल्लाह की नाफरमानी का अन्जाम निहायत खौफनाक है ।

152. तमाम बुराईयां नफसानी ख्वाहिशात से पैदा होती है

153. वह शख्स नाफरमान है खुदा का, जो एहसान कर के जताए।

154. जब तक किसी गुफ्तुगू न हो इसे अपने से हकीर न समझों

155. तौबा बूढे से खूब मगर जवान से खूबतर है

156. जो जन्नत की ख्वाहिश करता वह भलाई की तरफ जल्दी करता है ।

157. अहमक (बेवकूफ) की अकल उसकी जबान के पीछे, और अकलमंद की जबान उसकी उकल के पेछे होती है।

158. इन्तेकाम की कुव्वत रखते हुए गुस्से को पी जाना अफजल जहाद है

159. अगर किसी को तुम्हारे बारे में अच्छा ख्याल हो तो उसे अच्छा कर दिखाओं

160. एहसान एक ऐसी नेकी है जिसका अज्र बहुत ज़्यादा मिल्ता है।

161. दूसरो के हालात देख कर नसीहत हासिल करने वाला अकलमंद है।

162. मसायब का मुकाबला सब्र से और ने अमत की हिफाजत शुक्र से करो।

163. नेअमत का मिलना भी आज़माईश है कि कौन कितना शुक्र गुजार है

164. बुरी आदत पर गालिब आना कमाले इबादत है।

165. अगर आंखे रोशन है तो हर रोज यौमे महशर है

166. नेक लोगों को दुशमनों से भी नफा हासिल होता है

167. मुस्कराहट रूह का दरवाजा खोलती है

168. जिसे अमानत का पास नही उसका ईमान ना मुकम्मल है

169. जिस ने आर जुओ की तवील (लम्बा) किया उसने उम्र को खराब किया

170. उस ख्याल को दिल में न लाओ जो अपना फायदा सोचता है

171. गुस्सा हमेशा हमाकत पे शुरू होकर नदामत (अफसोस) पे खत्म हता है

172. दीनी इल्म ऐसा बादल है जिससे रहमत ही रहमत बरसती है।

173. ईसार (कुरबानी) अफजल तरीन इबादत और बुलंद तरीन सरदारी है

174. दोस्त नुमा दुशमन ज्यादा खतरनाक है

175. आखिरत नेक लोगों की कामियाबी और दुनया बदबख्त लोगो की आरजू है

176. इन्सान सीरत से हसीन है न कि सूरत से

177. जबान की हिफाजत सोने चांदी से बढ़ कर

178. ज्यादा ख्वाहिश वाले का पेट नही भरता

179. जिसने थोड़े पर कनाअत की वह साबिर हो गया

180. अल्लाह की पियारे की आदत का खाना कम सोना और कम बोलना है।

181. इन्सान वह है जिस को शर्म व हया का एहसास दामनगीर होता है ।

182. खुश इख्लाकी रूह मे बसने वाली खुशबू है

183. मुहताज को मोहलत देना कोई एहसान नही बल्कि अदल और इन्साफ है।

184. फकीर का एक दिरहम सदका दौलतमंद के लाख दिरहम सदका से बहतर है

185. बेकार बैठने से जिन्दगी की मुशकिलात बढ़ती है

186. तीन चीजों की मुहब्बत मुजिर (नुकसान) है, नफ्स जिन्दगी और माल

187. माल से जिस्मानी सेहत अफ्जल है, और सेहत से अफजल कल्ब की प्रहेजगारी है।

188. तो दुनया कमाने में मसरूफ है ।और दुनया तुझे यहां से निकालने में सर गरम है।

189. सब से जियादा सख्त गुनाह वह है। जो नज़र मे सबसे छोटा है।

190. जिस में अदब नही उस मे बुराइयां ही बुराइयां है।

191. अक़लमन्द सोच के बोलता है और बे वकूफ बोल के सोचता है।

192. वह इल्म बेकार है जिस पर अमल न किया जाए।

193. हर नेक काम करने से दिल को सुकून मिलता है ।

194. किसी का मज़ाक़ उड़ाना खतरा है।कहीं आप उस मुसीबत में न फंस जाएं

195. नशा अगरचे सांप नहीं मगर सांप से ज्यादा खतरनाक है ।

196. दुनया की रंगीनियों मे खोकर अपनी आखिरत बरबाद न करो।

197. दोस्तो पर एहसान करके और दुशमनों की तवाज़ोअ कर के उन्हें गरवीदह बनाओ।

198. किसी के साथ नेकी करके यह न समझो कि मैं ने एहसान किया बल्कि यह सोचो कि अल्लाह ने मेरे हक़ बेहतर इरादा फरमाया है।

199. अपने बड़ों की इज़्ज़त करो आप के छोटे आप की इज़्ज़त करेंगे।

200. अल्लाह अज़्ज़ा वजल्ल हमारे लिए काफी है और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमारे लिए शाफी हैं।

रज़ा हिन्दी इस्लामिक लाइब्रेरी जामा मस्जिद दमुआ
अब्दुर्रहीम खान क़ादरी जमदा शाही ज़िला बस्ती यू पी 272002

jamdashai.blogspot.com
haquegoi.blogspot.com

shifakhanajamdashahi.blogspot.co.in

jamdashahi.blogspit.co.in

खतीब व इमाम जामा मस्जिद दमुआ ज़िला छिंदवाड़ा मध्य प्रदेश 480555

E:mail.ID- khanjamdashahi@gmail.com

Mob:9039807215 9303046736

7275912387 9993738057

ईमान नामा

ईमान : कलम–ए–तय्यबा ज़बान से पढ़ना दिल से उसके मानी सच जानना ' ईमान के यही दो फ़र्ज़ है।

कलमए तय्यब

लाइलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह

इसके मानी है – नही कोई इबादत के लाईक़ सिवा अल्लाह के ' मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के पैग़म्बर हैं । कलमे में तीन फ़र्ज़ है । उम्र में एक बार पढ़ना'सही पढ़ना कोई पढ़ने के लिए बोले तो जल्दी से पढ़ना

ईमान की सिफ्तें सात हैं

1ः–अल्लाह पर ईमान लाना 2ः– फरिशतों पर ईमान लाना 3ः– किताबों पर ईमान लाना

4ः– पैग़म्बरों पर ईमान लाना 5ः– कियामत पर ईमान लाना 6ः–तक़्दीर पर ईमान लाना 7ः–मर कर उठने पर ईमान लाना

ईमान की भार्तें सात हैं

1ः–इख्तियार से ईमान लाना 2ः–ग़ैब पर ईमान लाना 3ः– ग़ैब की ख़बर खुदा ही जानता है उसके बताने से रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी ग़ैब की ख़बर है यह समझ कर ईमान लाना । 4ः– हलाल को हलाल समझना 5ः–और हराम को हराम 6ः– खुदा के ग़ज़ब से ड़रते रहना 7ः– उस के रहम का उम्मीद वार रहना

ईमान सलामत रहने की भार्तें चार हैं

1ः–ईमान पाने से खु ा रहना । 2ः–ईमान जाने से ड़रते रहना 3ः– ईमान जाने की चीजो़ से दूर रहना 4ः–मुसलमान पर मेहरबान रहना

ईमान के वाजिब बारह हैं

1:– बिदअत से परहेज़ करना 2:– नेकों की सोहबत में रहना 3:– बुरों से दूर रहना 4:– अपने लोगों को इल्म का दीन सिखाना 5:– सगों से (रिशतेदारों से)मिलाप करना 6:– दो मुसलमान लड़ते हों तो मिला देना 7:– यतीमों को प्यार करना 8:– प्यासे को पानी पिलाना 9:– मिस्कीनों पर रहम करना 10:– रास्ते से कांटे या नापाकी दूर करना 11:– मुर्दे का नहलाना 12:– बीमार को पूछना

इस्लाम के पांच अरकान

1:–कलमए शहादत पढ़पा 2:– नमाज़ 3:– रोज़ा 4:– ज़कात 5:– हज

इस्लाम के वाजिब सात हैं 1:– वित्र 2:– फितरा 3:– कुर्बानी 4:– उमरा 5:– मां बाप की फरमांबरदारी 6:– बीवी को शौहर की फरमांबरदारी 7:– बीवी के खन पान का ख़र्च

इस्लाम की सुन्नतें

1 खतना 2 सर के 3 नाक के
4 लब के 5 बग़ल के 6 नाफ तले के बाल निकालना 6 नाखुन तराशना
7 दाढ़ी रखना

मेमिन मर्द के औसाफ

हज़रत अबू दुजाना अहमद बिन इब्रहीम ने फरमाया । मैं ने अबुल फैज़ जुन्नून
बिन इब्राहीम अख़मीमी रहमतुल्लाह से पढ़ा आप ने मोमिन की सिफात ब्यान करते
हुए इरशाद फरमाया

मेमिन मर्द के औसाफ

हज़रत अबू दुजाना अहमद बिन इब्रहीम ने फरमाया । मैं ने अबुल फैज़ जुन्नून बिन इब्राहीम
अख़मीमी रहमतुल्लाह से पढ़ा आप ने मोमिन की सिफात बयान करते हुए इरशाद फरमाया

1:— मामिन की खुशी उस के चेहरे से अयां होती है और उस का रंज व ग़म दिल में होता
है।

2:— मामिन का सीना कुशादा और नफ्स मु त वाज़ेअ होता है

3:— मोमिन हर तरह की बुराई से दूर रहता है और हर तरह की नेकी पर
आमादा रहता है।

4:— न कीना परवर होता है और न ही हसद करता है

5:— मोमिन जुल्म व ज़्यादती नहीं करता और न ही गाली गुलूज करता हैं

6:— मोमिन अैब जू नही होता और न ही ग़ीबत करता है ।

7:— मोमिन नाम व नमूद और शोहरत का ना पसन्द करता है।

8:— मोमिन ग़म व अन्दोह से दूर रहता है

9:— मोमिन बकसरत ख़ामोश रहता है मोमिन बा वक़ार रहता है ।

10:— मोमिन बहोत ज़ाकिर और साबिर व शाकिर रहता है

11:— मोमिन अपनी फिक्र से मअमूर होता है और अपने फक्र से मसरुर
होता है ।

12:— मोमिन नरम तबीअत और नरम ख़ू होता है।

13:– मोमिन शर्म व हया का पैकर,वक़ार की हिफाज़त करने वाला
और कम तक्लीफ देने वाला होता है।
14:–मोमिन न बोहतान बांधता है और न किसी को बे आबरु करता है ।

15:–मोमिन अगर हंस्ता है तो बेवक़ोफों की तरह नहीं हंस्ता है और अगर मोमिन गुस्सा करता है
तो बे क़ाबू नहीं होता है ।
16:– मोमिन की हंसी तबस्सुम(मुस्कराहट)है उसका सवाल सीखने के लिए और कलाम
का अआादा अच्छी तरह समझने के लिए होता है ।
17:– मोमिन के पास इल्म ज़ियादा होता है और वह बड़ा बुर्दबार होता है।
17:– मोमिन अज़्म का पक्का होता है मोमिन मेहरबान और शफीक़ होता है

18:– मोमिन बुख्ल से काम नही लेता है और न जल्दी बाज़ी करता है।
19:– मोमिन तंगी मआश पर बे क़रार व बेचैन नही होता है और न ही खुश हाली
पर इतराता है ।
20:– मोमिन अपने फैसले में किसी पर जुल्म व ज़्यादती नही करता है
और इल्म में तरद्दुद का शिकार नही होता है

21:– मोमिन की निय्यत पत्थर से ज़्यादा मज़बूत होती है उस की हम नशीनी
शहद से ज़्यादा शीरीं(मीठा)होती है।
22:– मोमिन लालची नहीं होता है और न ही ड़रपोक होता है।

23:– मोमिन संग दिल नहीं होता है और न ही ड़ेंग मारता है।

24:– मोमिन कलाम गुलू (बढ़ा चढ़ा कर)नही बोलता है और बे मक़सद बातों
से परहेज़ करता है ।

25:– मोमिन गुस्से में भी आदिल होता है और अगर तलब करता है तो नर्मी से काम लेता है

26:– मोमिन लापरवाह नहीं होता है और न ही सरकश होता है ।

27:– मोमिन महब्बत में मुख्लिस अहद का पक्का और वअदा वफा करने वाला होता है।

28:– मोमिन शफीक़ सख़ी और हलीम व बुर्दबार होता है
29:– मोमिन अल्ला अज़्जा वजल्ल से राज़ी रहता है और ख्वाहिशाते नफ्स
का मुख़ालिफ होता है।
30:– मोमिन अपने ईज़ा देने वाले पर सख़्ती नहीं करता और बे मक़सद
कामों में नहीं पड़ता है।
31:– मोमिन को अगर बिला वजह या ग़ैर मु त वक़्क़अ तौर पर बुरा भला
कहा जाये तो वह ज़बान में बुरा भला नहीं कहता है। और अगर सवाल
करने पर न पाये तो ग़ज़बनाक नही होता है।
32:– मोमिन किसी की मुसीबत पर खुश नही होता और बुराई के साथ किसी
का भी ज़िक्र नहीं करता –
33:– मोमिन बहोत फज़्ल व सख़ा वाला और कुशादा दस्त व फराख़ दिल होता है।
(नर्म मिज़ाज़)

34:– मोमिन ज़बान का सच्चा और हिर्स व लालच से पाक होता है।
35:– मोमिन कम ख़र्च करने वाला और बहोत मदद करने वाला होता है।
36:–मोमिन हराम कामों से ख़ूब बचता है और शुबहात से दूर रहता है।
37:– मुसीबत पर सब्र ख़ूब शुक्र अदा करता है। और तकलीफ दह चीज़ों
पर ख़ूब सब्र करता है।
38:– मोमिन बहोत भलाई करता है। उस में शर व फसाद नही होता है।
39:– मोमिन से अगर सवाल किया जाये तो अता करता है। और अगर उस
पर ज़ुल्म किया जाये तो मुआफ कर देता है।

40:– मोमिन अगर महरुम हो तो भी अल्लाह की राह में ख़र्च करता है।
अगर इस से क़तअ तअल्लुक़ किया जाये तो वह सिला रहमी करता है।

41:– मोमिन अपने क़ल्ब की आज़माईश करता है। अपने रब का मुख्लिस होता है।
42:– मोमिन झाग से ज़्यादा नर्म शहद से ज़्यादा मीठा और अल्लाह के दीन में चट्टान
से ज़्यादा सख्त होता है।
43:– मोमिन उस बला से उन्स व मुहब्बत रखता है। जिस

से अहले दुनिया वहशत रखते हैं।
44:– मोमिन हक़ बात का हुक्म देने वाला और इख़्लास के साथ बुराई से बहोत रोकने
वाला होता है।
45:– मोमिन अल्लाह के लिए बहोत ग़ज़ब नाक और उस की ख़ुशनूदी हासिल करने
में जल्दी करने वाला होता है।
47:–मोमिन जब अपनी लगजिशों का इदराक कर लेता है। और अपने नफ्स की
क़द्र व मन्ज़िलत पहचान लेता है तो नफ्स की इज़्ज़त व अज़मत को पसन्द करने लगता है।
और ग़लबए   नफ्स को बुरा जानने लगता है नफ्स उस की नज़र में ज़लील व रुसवा हो जाता है।
और उसे हर तरह की खिदमत मुम्किन हो जाती है।
48:– मोमिन दीन का नासिर व मददगार होता है। मुसलमानों का दिफाअ करने
वाला और मोहताजों का सहारा होता है।

49:— मोमिन की तारीफ व तौसीफ उस के कान में भली नही लगती है।
और हिर्स व तमअ(लालच) उस के दिल में दाखिल नही होता है।
50:— गुस्सा मोमिन के हिल्म व बुर्दबारी से क़रीब नही होता और जहालत उसके
इल्म को आबदार नही पैदा करती और दुनया की मुसीबतें उसे के
अज़्म में कमी नही पैदा करती ।
51:— मोमिन अच्छी बात बोलने वाला और उस पर अमल करने वाला होता है।
52:— मोमिन आलिम और दूर अन्देश होता है।
मेमिन बद इख्लाक नहीं होता है ओर कम अक़्ल नही होता ।
53:— मोमिन घबराता नहीं है लेकिन इतना नही कि कोई उसे तकलीफ
पहोंचादे असराफ के इलावह खूब खर्च करता है।

54:– मोमिन का इल्म ज़्यादा और उस की नादानी कम होती है।
55:– मोमिन लोगों की गलतियां तलाश नही करता और किसी इन्सान
को हक़ीर नहीं समझता है।
56:– मोमिन ख़ल्क़े खुदा पर मेहरबान और ज़मीन में खूब शैर करने वाला होता है।
57:– मोमिन कमज़ोरों की एआनत (मदद) करता है। और मज़लूम की फरयादरसी करता है।

58:– मोमिन किसी को बे आबरू नही करता और न किसी का राज़ फाश करता है।
59:– मोमिन की आज़माईश ज़्यादा होती है और वह उस पर शिकवह व शिकायत कम करता है।
60:– मोमिन अगर नेक काम देखता है तो उस का ताज़्किरा करता है और अगर बुरा काम
देखता है तो परदा पोशी करता है।
61:– मोमिन अैब पोशी नहीं करता है राज़ की हिफाजत करता है। लग़जिश को दर गुज़र करता है।
और गलती को मुआफ कर देता है।
62:– मोमिन किसी अच्छी बात पर मुत्तलअ होकर उसे

छोड़ता नहीं और हमाक़त की निशानिया
देख कर उस से मुंह मोड़ लेता है।
63:– मोमिन अमीन और साहबे इस्तेक़ामत होता हैं ।
64:– मोमिन हर क़िस्म की आलाईशों से पाक, सुथरा और परहेज़ गार होता है।
65:– मोमिन सालेह व नेकूकार और राज़ी बारज़ाए इलाही होता है।
66:– मोमिन अकसर खामोश रहता है लेकिन गुफ्तुगू से आजिज़ नही़ होता ।
67:– मोमिन उज्र कबूल करता है और नसीहत लेता है

68:– मोमिन लोगों के मुत अल्लिक अच्छा गुमान करता है और खुद अपने नफ्स को मुजरिम गरदानता है
68:– मोमिन अल्लाह के लिए मुहब्बत करता है फहम व फरासत के साथ और अल्लाह के लिए
कतए तअल्लुक करता है हज्म व अज्म के साथ ।
69:– मोमिन खुशी से इतराता नहीं और मुसीबत उसे बेकाबू नही करती।
70:– मोमिन की हमनशीनी वुस्अत व कुशादगी का बाइस है और मोमिन
ज़ियारत दलील व बुरहान है

71:– इल्म की दौलत मोमिन को हर बुरी आदत से साफ व सुथरा कर देती है
जिस तरह आग जंग आलूद लूहे को साफ व सुथरा कर देती है
72:– मोमिन एहसान के ज़रिया शरमिन्दा नहीं करता और न एहसान जतलाता है ।
73:– मोमिन ग़ाफिल शख्स को याद दिलाता है और जाहिल को सिखाता है ।
74:– मोमिन की जात से किसी लक्लीफ दह बात का खौफ नहीं होता और न ही
उस की तरफ से किसी फसाद का अन्देशा होता है ।

75:– मोमिन के नज़दीक हर दोसरे जद्दो जहद उसकी अपनी जद्दो जहद से अच्छी होती है
और हर नफ्स उस के नज़दीक उसके अपने नफ्स से बेहतर होता है ।

76:– मोमिन अपने उयूब पर नज़र रखता है । अपनी धुन में मगन रहता है ।
रब त आला के इलावा किसी का उसे होश नहीं होता । 77:– मोमिन बेदार दिल और अपने आप में बेमिसाल होता है ।
78:– मोमिन क़रीब और दूसरे के लिए अजनबी है ।
79:– मोमिन अल्लाह से महब्बत करता है और उसकी रज़ा के हुसूल में कोशां रहता है ।
80:– मोमिन अपनी ज़ात के लिए बदला नहीं लेता । अल्लाह तआला की नाराज़गी
वाले कामों में किसी से दोस्ती नहीं रखता।
81:– मोमिन अल्लाह को याद करने वालों की हम नशीनी इख़्तियार करता है ।
अहले सिदक व सफा के साथ उठता बैठता है । अहलेहक को तरजीह देता है ।

82:– मोमिन गरीबुल वतन बेसहारों का सहारा और यतीमों का वाली होता है ।
83:– मोमिन बेवह औरतों का हामी व निगहबान होता है और मुहताजों पर मेहरबान होता है ।
84:– मोमिन से हर मुसीबत के वक़्त उम्मीद की जाती है और हर सख्ती में उस से तवक़्को होती है ।
85:– मोमिन हशशाश व बशशाश रहता है ।
मेमिन तुर्श रो ओर तियोरी चढ़ाने वाला नहीं होता और न किसी की टोह में रहता है ।

86:— मोमिन महब्बत करने वाला और साहबे सिदक व सफा होता है ।
87:— मोमिन गुस्से को पीने वाला, मुस्कराने वाला होता है ।
मेमिन बारीक बीं और आला कद्र व मनज़लत वाला होता है।
88:— मोमिन सफर में होता है तब भी मुतमईन और ग़ाफिल नहीं बैठता ।
89:— मोमिन अपनी सरज़मीन में मशहूर व मारूफ होता है और उसके घर वाले उसकी हैसियत
से ना वाक़िफ होता है । हसद की वजह से

मुसलमान औरत के औसाफ

90 मोमिना अपने उयूब पर नज़र रखती है। अपने गुनाहों के बारे में सोचती अपने रब की तरफ
मुतवज्जेह होती है। अपनी आवाज़ को पस्त रखती है। और अक्सर ख़ामोश रहती है।
91 मोमिना नरम तबीअत होती है और ज़बान की हिफाज़त करती है।
92:– वह हया में डूबी हुई फहश कलामी से महफुज़ होती है।
93:– वह वसीउल क़ल्ब बहोत ज़्यादा सब्र करने वाली होती है।
94:– मोमिना मक्र व फरेब नहीं करती ब कसरत ुक्र अदा करने वाली होती है।
95:– वह साफ दिल और बे अैब होती है
96:– मोमिना बा हया और नेक होती है।
97:– मोमिना अल्लाह की रज़ा पर राज़ी रहती है। और दिल साफ रखती है।
98:– वह सन्जीदा बा वक़ार और ारीफुत्तबअ होती है।
99:– मोमिना नरम खू नरम तबीअत और मेहरबान होती है।
100:– मोमिना झूठ से पाक और खुद पसन्दी से दूर रहती है।

101:– मोमिना हर ना पसन्दीदा बात का छोड़ देती है। और दुनिया से बे रग़बत होती है।
102:– मोमिना घर में ठेहरने वाली और दूर अन्देश होती है।
103:– मोमिना सतर पोशी को पसन्द करती है और बहोत बा हया होती है।
104:– मोमिना बेजा बातों में नहीं लगी रहती है और ही अपना वक़्त लहव लअब (खेल कूद)में
में बरबाद नहीं करती है।
105:– मोमिना बहाना बाज़ी नहीं करती और अमल में मोहकम होती है।
106:– मोमिना रहम दिल और ख़ालिस (पेवर)मुहब्बत वाली होती है।
107:– अगर किसी बात से रोका जाये तो रुक जाती है अगर हुक्म दिया जाये तो बजा लाती है।
108:–ड़ेग नहीं मारती और हद से तजावुज़ को ना पसन्द करती है असराफ (फुजूल खर्च)
से नफरत करती है।
109:– मोमिना मकरुह व ना पसन्दीदा ौ को मकरुह

समझती है। और फखर व मबाहत ना
पसन्दीदा करती है।
110:– मोमिना सफाई सुथराई को और ज़ीनत के (सिंगार)ज़रिया औरतों में अपना मुक़ाम बनालेती है।

111:– मोमिना ब क़द्र ज़रुरत पर इक्तेफा करती है। और कुछ भी न मिले तब
भी पाकदामनी इख़्तियार करती करती है
112:– अहले ख़ाना पर मेहरबान और शौहर से नरमी का बरताव करती है।
113:– अपने शौहर की अताअत(फरमांबरदारी)गुज़ार और उस से सच्ची मुहब्बत
करती है।

114:– वह अपने वजूद को शौहर की मल्कियत समझती है। और शिद्दते हया से
उसे निगाह भर नहीं देखती है
115:– मोमिना शौहर की ख़्वाहिश पर अपनी ख़्वाहिश को कुर्बान कर देती है। उस के मश्वरे
पर अपने मश्वरे को तर्क करदेती है।
116:–वह अपने शौहर को अपनी जान का वकील बनादेती है। और शौहर को अपने
राज़ों का अमीन बनादेती है।
117:– मोमिना अपने शौहर से अटूट मुहब्बत करती है। और शौहर का अपने वालदैन पर तरजीह देती है।
118:– अपने शौहर के उयूब बयान नही करती है और न ही उस का राज़ फाश करती है।
119:– मोमिना अपने शौहर का हुक्म अच्छी तरह बजर लाती है और हमेशा उस
की खुशनुदी की ज़ोयां रहती है।

120:– जब शैहर तंगदस्त हो तो बद सुलूकी नहीं करती

ओर मोहताजी की
हालत में हो तो उसे दुश्मन नहीं रखती बल्कि फक़र (ग़रीबी)व मोताजी में और ज़्यादा
मुहब्बत करती है।
121:– ौहर के गुस्से पर हिल्म व सब्र से काम लेती है। और महब्बत व
शुक्र के साथ उस के साथ रहती है।
122:– अगर शैहर उस के साथ बदसुलूकी करे तो मुआफ कर देती है। अगर
शौहर किस ैर को तरजीह दे तो सब्र कर लेती है।
123:– शाहर गुस्सा हो जाये तो हमेशा उस की रज़ा मन्दी तिलाश करती है।
उस की नाराज़ी में एहतियात से रहती है।
124:– ौहर की अदम मौजूदगी में उसे अच्छा नहीं लगता और शैहर को देख कर उसे
उन्स व क़रार हासिल होता है।
125:– मोमिना अल्लाह के एहकामात व इरशाद को जान बूझ कर उस की रोशनी में
श्हर के हुकूक़ अदा किये उस की वजह से औरत को ौहर की ज़रुरत और ज़्यादा बढ़ गई
और वह सिर्फ अपने ौहर पर भरोसा करती है चुनान्चे वह ौहर ही के कान से सुनती है। और उसी के दिमाग़
से सोचती है। और उस का ौहर उस को निगाहे मुहब्बत से देखता है। और उस को मेहरबान दिल से महसूस
करता है। अल्लाह मोमिना पर रहमतों का नुज़ूल फरमाये ।

आमीन । यह रिसाला मुकम्मल हुआ